

# अमेज-202

अमेज-202 हे एग्रीअस इंडिया प्रायवेट लिमिटेड, भोपाल यानी विकसित कलल मक्याच सकरित वाण आहे.

**लागवडीसाठी शिफारस केलेले क्षेत्र:**

महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ, आंध्र प्रदेश, ओडीशा, तेलंगणा, कर्नाटक, तामिळनाडू.

**हंगाम :** या वाणाची शिफारस खरीप व रबी हंगामासाठी केली आहे.

**जमिनीची निवड व पश्चात:** अमेज-202 विविध प्रकारच्या जमिनीत

वालुकामय ते चिकन माती मध्ये घेता येते. योग्य निचरा नसलेली खोलगट व क्षारयुक्त जमिन टाळणे गरजेचे आहे. जमिनीची १ नागणी करून ३ ते ४ वखणी करावी. शेवटच्या वखणी अगोदर २०-२५ नाड्या/हेक्टर चांगले कुजलेले शेणखत किंवा कंपोस्ट खत जमिनीत व्यवस्थित मिसळावे.

**बीज प्रक्रिया :** बियाण्यास मेटलॅक्सी या बुरशीनाशकाची ३.५ ग्राम/किलो बियाणेची प्रक्रिया केलेली आहे.

**पेरणीची वेळ :** खरीप: मे ते जुलै.

**रबी :** ऑक्टोबर ते डिसेंबर.

**बियाण्याचे प्रमाण, लागवडीची पद्धत व अंतर :** एक हेक्टर लागवडीसाठी १८-२० किलो बियाणे घेणे आहे. पेरणी तिफनच्या साहाय्याने दोन ओळीतील अंतर ६० सेंमी. व दोन झाडातील अंतर २०-२५ सेंमी. कर करावी.

**रासायनिक खते व सुक्ष्म अन्नद्रव्ये व्यवस्थापन:**

खतांची मात्रा मृदा चाचणीच्या आधारावर तसेच कृषी विद्यापीठ किंवा कृषी विभागाच्या शिफारसीच्या आधारे ठरवावी. साधारणपणे शिफारस केलेली मात्रा १२० किलो नत्र ६० किलो स्फुरदः ८० किलो पालाश प्रति हेक्टर आहे.

पेरणीच्या वेळी - ४० किलो नत्र + ६० किलो स्फुरद व ४० किलो पालाश दुसरी मात्रा - ४० किलो नत्र (पेरणीनंतर २१ दिवसांनी) तिसरी मात्रा - ४० किलो नत्र ४० किलो पालाश (पेरणीनंतर ४५ दिवसांनी)

जमिनीत झिकची कमतरता आढळून आल्यास २०-२५ किलो झिक सल्फेट प्रति हेक्टर घ्यावे. पेरणीच्या वेळी व्हाईट्लू १० किलो / हेक्टर व कॅलबूम १२.५ किलो/हेक्टर पहिल्या मात्रेसोबत मिसळावे व कॅलबूमची दुसरी मात्रा नत्राच्या दुसऱ्या (पेरणीच्या ६० दिवसांनी) मात्रेसोबत घ्यावे.

**तण नियंत्रण :** तण उगवणीपूर्ण, अँट्राजिन (पाउडर) १ किलो / एकर घ्यावे. अँट्राजिन हे युरियाच्या पुरेश्या प्रमाणा मध्ये मिसळून पेरणी च्या वेळी घ्यावे. तण आल्यानंतर, चांगल्या तण नियंत्रणासाठी ३७५ लिटर पाण्यामध्ये टिंडर तणनाशक @ ३३.६ ग्रॅम. ए.आय प्रति/लिटर एम.एस. ओ. एडजुवेंट्स @ २ मिली प्रति प्रति/लिटर / पाण्यामध्ये मिसळावे. (३ मिली टिंडर + ३० मिली एम. एस. ओ. एडजुवेंट्स प्रति लिटर पाणी). शेत तण मुक्त ठेवण्यासाठी ४०-४५ दिवसांपर्यंत २-३ डवरण्या कराव्या.

**किड नियंत्रण:** खोड किडा च्या नियंत्रणासाठी कार्बोथ्युरॉन ३जी १०

किलो/हेक्टर घ्यावे. देठाभोवतालचे पाने जवळ घ्यावे. लष्करी अळीच्या नियंत्रणासाठी रोप तयार होतांना ते देठाभोवताली पाने येण्याच्या अवस्था मध्ये ५% एम. एस. के.ई. १५०० पीपीएम @ ५ मिली/ लि एफ.ए.डब्ल्यू. च्या दुसऱ्या व तिसऱ्या अवस्था मध्ये इमामेक्टीन बेनझोएट @ ०.४ ग्राम/लि. किंवा स्पीनोसॅड @ ०.३ मिली/लि. किंवा थायमेथेक्झम १२.६% + लॅन्डा सायहॅलोप्रॉन ९.५% @ ०.५ मिली/लि. किंवा क्लोरेट्रिनिलिप्रॉल १८.५% एस.सी. ०.३ मिली/लि. पाणी.

**रोग नियंत्रण:** रोगांचा प्रादुर्भाव कमी राखण्यासाठी शेतात स्वच्छता ठेवावी पिक फेरपालट करून रोगग्रस्त झाडे दिसताच उपटून नष्ट करावी. करपा रोगाच्या नियंत्रणासाठी झायनेब ०.२% ची फवारणी करावी.

**ओलीत व्यवस्थापन :** जमिनीच्या प्रकारानुसार व उपलब्ध ओलाव्यानुसार पिकास नियमित पाणी घ्यावे. तुऱ्याची अवस्था, स्वीकेसर बाहेर पडण्याची अवस्था व दुधाळ अवस्थामध्ये पाण्याची जास्त गरज असते.

**कापणी:** पक्वता झाल्यानंतर, कणसावरील आवरण वाळून तपकीरी झाल्यानंतर व दाणे कडक झाल्यानंतर पिकाची कापणी करावी. कापणीनंतर कणीस २ ते ३ दिवस वाळवून मशीनने दाणे काढून उन्हात वाळवून सरक्षित साठवावे.

**टीप :** १) या परिपत्रकात दिलेली माहिती कंपनीच्या संशोधन केंद्रावरील माहितीवर आधारित आहे. वातावरणातील तसेच

जमिनीतील फरकामुळे यामध्ये बदल होण्याची शक्यता आहे.

२) आमची बियाणे किटकनाशके व रोगनाशके विचारी औषधे लावलेली असतात म्हणून त्याचा वापर फक्त

पेरणीसाठीच करावा.

३) या परिपत्रकाच्या शेवटी दिलेले अस्वीकृतिपत्र वाचावे.

# अमेज-202

अमेज-202 यह एग्रीअस इंडिया प्रायवेट लिमिटेड, भोपाल द्वारा विकसित की गयी संकर मक्का किस्म है।

**बुआई के लिए सिफारिश किये गये क्षेत्र :**

महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु ।

**मौसम :** इस किस्म की सिफारिश खरीफ एवं रबी मौसम में की गयी है।

**जमीन का चुनाव एवं जमीन की तैयारी :** अमेज-202 इस किस्म की

बुआई रैतीली दोमट से बलुई दोमट जमीन में कर सकते है। जिस जमीन की जल निकासी अच्छी ना हो एवं जमीन में क्षार की मात्रा अधिक होनेपर ऐसी जमीन में बुआई ना करें। जमीन की अच्छी तरह जुताई करने के बाद ३ से ४ बार हेंगा फेरना चाहिए। अखिर हेंगा फेरने से पूर्व २० से २५ गाडी / हेक्टर पुरी तरह सड़ी हुई गोबर खाद या कंपोस्ट खाद अच्छी तरह मिलाकर जमीन समतल कर लें।

**बीजोपचार :** बीज को मेटलॅक्सी इस फफूंदीनाशक की ३.५ ग्राम/किलो बीज की दर से उपचारित किया गया है।

**बुआई का समय एवं बुआई का तरीका:**

**खरीफ :** मे से जुलाई

**रबी :** अक्टूबर से दिसंबर

**बीज दर, बुआई का तरीका एवं दूरी :** एक हेक्टर बुआई के लिए १८ से २० किलो बीज पर्याप्त है। बुआई मशीनद्वारा करें तथा २ कतार के बिच की दूरी ६० सेंमी एवं २ पौधों के बिच २०-२५ सेंमी. दूरी रखें।

**रासायनिक उर्वरक एवं सुक्ष्म पोषकतत्व प्रबंधन :**

मिट्टी परीक्षण, कृषि विश्वविद्यालय एवं कृषि विभागद्वारा सिफारिश के आधारपर उर्वरकों की मात्रा तय करें। सामान्यतः फसल को सिफारिश की गयी मात्रा १२० किलो नत्रजनः ६० किलो फास्फोरसः ८० किलो पोटाश है। बुआई के समयः ४० किलो नत्रजनः ६० किलो फास्फोरसः ४० किलो पोटाश।

दूसरी मात्रा - ४० किलो नत्रजन (बुआई के २१ दिनों बाद)

तिसरी मात्रा - ४० किलो नत्रजनः ४० किलो पोटाश (बुआई के ४५ दिनों बाद)

जमीन में फिक कमी होने पर २०-२५ किलो/हेक्टेयर जिक सल्फेट का उपयोग करें। बुआई के समय वाईटलू १० किलो / हेक्टेयर एवं कॅलबूम १२.५ किलो/हेक्टेयर पहली मात्रा के साथ तथा कॅलबूम की दूसरी मात्रा उर्वरक की दूसरी मात्रा के साथ (बुआई के ६० दिनों बाद) दें।

**खरपतवार नियंत्रण :** खरपतवार आने से पहले, अँट्राझिन (पावडर) @ १ किलो / एकड़। अँट्राझिन यह युरिया की पर्याप्त मात्रा में मिलीकर बुआई के समय दें। खरपवार आने के बाद, प्रभावित खरपतवार नियंत्रण के लिए ३७५ लिटर पानी में टिंडर ३३.६ ग्रॅम ए.आय./लिटर + एम.एस.ओ. एडजुवेंट्स २ मिली प्रति लिटर पानी (३ मिली टिंडर ३० मिली एम.एस.ओ. एडजुवेंट्स प्रति लिटर पानी.) फसल ४०-४५ दिनों की होने तक २-३ बार खुरपी अथवा शस्य क्रिया से खरपवार नियंत्रण करें।

**कीट एवं विमारी नियंत्रण:**

**किट :** तना छेदक के नियंत्रण हेतु कार्बोथ्युरॉन ३जी १० किलो/हेक्टेयर डंठल चारों ओर पत्तियों के गुच्छा के पास उपयोग करें। लष्करी ईल्ली के नियंत्रण हेतु पौधा तयार होने के अवस्था से डंठल के चारों ओर पत्तियों के गुच्छा आने के अवस्था में ५% एम.एस.के.ई. १५०० पीपीएम @ ५ मिली/लि. एफ.ए. डब्ल्यू. के दूसरे एव तिसरे अवस्था में इमामेक्टीन बेनझोएट @ ०.४ ग्राम/लि. तथा स्पीनोसॅड @ ०.३ मिली/लि. तथा थायमेथेक्झम १२.६% + लॅन्डा सायटॅलोप्रॉन ९.५% @ ०.५ मिली/लि. अथवा क्लोरेट्रिनिलिप्रोल १८.५% एस.सी. ०.३ मिली/ली. पाणी.

**विमारी :** खेत में सफाई रहने से विमारी नियंत्रण में मदद मिलती है। फसल बदलाव करें एवं क्षतीग्रस्त पौधे उखाड़कर नष्ट करें । फसलपर झायनेब ०.२% का छिड़काव करें।

**सिंचाई प्रबंधन :** मिट्टी की नमी एवं प्रकार के आधारपर सिंचाई करें । नर मंजरी आते समय, मादा फुल आनेकी अवस्था एवं दुधिया अवस्थाओं में पानी की आवश्यकता अधिक होती है।

**कटाई :** परिपक्व होनेपर फसल की कटाई करनी चाहिए। कटाई के बाद २ बुट्टे २-३ दिन सुखाएँ तथा शेलर की मदद से दाने अलग करें तथा धुप में सुखाकर सुरक्षित भंडारण करें।

**सूचना :**

१) इस पत्रिका में दी गई जानकारी कंपनी के संशोधन पर आधारित है। मौसम तथा मिट्टी के बदलाव से इसमें फर्क आना संभव है।

२) हमारे बीज जहरीले कीटनाशक और रोगनाशक से उपचारित है इसलिए इसका उपयोग सिर्फ बुआई के लिए करें।

३) कृपया इस पत्रिका के अंत में दिया गया अस्वीकृति पत्र को अवश्य पढ़ें।

**सूचना :**

१) इस पत्रिका में दी गई जानकारी कंपनी के संशोधन पर आधारित है। मौसम तथा मिट्टी के बदलाव से इसमें फर्क आना संभव है।

२) हमारे बीज जहरीले कीटनाशक और रोगनाशक से उपचारित है इसलिए इसका उपयोग सिर्फ बुआई के लिए करें।

३) कृपया इस पत्रिका के अंत में दिया गया अस्वीकृति पत्र को अवश्य पढ़ें।

**सूचना :**

१) इस पत्रिका में दी गई जानकारी कंपनी के संशोधन पर आधारित है। मौसम तथा मिट्टी के बदलाव से इसमें फर्क आना संभव है।

२) हमारे बीज जहरीले कीटनाशक और रोगनाशक से उपचारित है इसलिए इसका उपयोग सिर्फ बुआई के लिए करें।

३) कृपया इस पत्रिका के अंत में दिया गया अस्वीकृति पत्र को अवश्य पढ़ें।

**संशोधक, उत्पादक, वितरक: एग्रीयस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड**

**पता :** एम.आई.जी.36, सेकण्ड फ्लोर, बी.डी.ए. कॉम्प्लेक्स, मनीषा मार्केट, शाहपुरा, भोपाल - 462016

**फोन :** 0755-4904800, +91 62628 48665

**Email:** agriusindia@gmail.com , www.agriusindia.com

# AMAZE-202

AMAZE-202 is the Maize Hybrid developed by AGRIOUS INDIA PVT. LTD.

**Recommended Area of Cultivation:**

Maharashtra, Madhya Pradesh, Chhattisgarh, Orissa. Gujarat, Rajasthan, Telangana, Karnataka and Tamilnadu.

**Season :** It is recommended for Kharif and Rabi Season

**Selection of Field and Land Preparation :** AMAZE-202 can be grown successfully in variety of soils ranging from loamy sand to clay loam. It is desirable to avoid low lying fields having poor drainage and also the field having higher salinity. One ploughing and 3-4 harrowing should be followed to get good tillage and mix 20-25 cart load FIM/ha before last harrowing.

**Seed Treatment:** Seed treated with Meatalaxyl Fungicide 3.5g per kg.

**Sowing time:**

**Kharif :** May to July

**Rabi :** October to December.

**Seed rate, Sowing method & Spacing :** 18-20 Kg/ha is followed to get the optimum plant population. Sowing is carried with seed drill maintaining row to row distance 60cm and plant to plant distance 20-25cm

**Fertilizer and Micro nutrient appucation :** The fertilizer doses should be applied on the basis soil test and recommendation of State Department of Agriculture or Agriculture Universities. However, the generalise dose of fertilizer for maize is 120 kg N: 60kg P :80 kg K per hectare. The fertilizer should be applied as following Basal 40 kg N: 60 Kg P :40Kg K (at the time of sowing)

Top dressing 40 Kg N (21 days after sowing)

Top dressing 40 kg N : 40kg K (45 days after sowing)

If Zinc deficiency found in soil use 20-25 kg /ha Zinc sulphate. Mix Vital 10kg/ha and Calboom 12.5kg/ha with basal dose, of fertilizer at the time of sowing. Apply 12.5 kg/ha Calboom at second top dressing of urea (60 days after sowing).

**Weed Management :** Pre-emergence application of Atrazine (Powder)@ of 1 kg/ acer should be done. Atrazine should be mix in sufficient quantity of urea and should be applied at the time of basal dose application. For post-emergence Tynzer herbicide 33.6 g a.i./L+ MSO adjuvant @ 2 ml/L water diluted to 375 lit of water per hectare can be used for effective weed control (3 ml Tynzer herbicide+ 30 ml of MSO adjuvant per 15 lit.) Two to three hoeing should be followed till 40-45 days crop age to keep the field weed free.

**Plant Protection:**

**Pest:** Use Corbofuron 3G @ 10kg/ha to control the stem borer by applying it in to the whorl. To control Fall Armyworm larvae spray 5% NSKE 1500ppm @ 5ml/l during seedling to whorl stage. To manage II and IIIrf instat of FAW use Enamectine benzoate @ 0.4g/l or spinosad @0.3m1/l or Thimethoxam 12.6% + Lambdacyth-halothrine 9.5% @ 0.5m1/l or Chlorantraniliprole 18.5% SC 0.3m1/l of water.

**Disease :** Clean cultivation always helps to reduce the disease attack. Follow the crop rotation and uproot the affected plant and destroy. Spray the crop with zineb @ 0.2% at the appearance of leaf blight.

**Water Management :** Crop should be irrigated at regular intervals based on available soil moisture and soil type. The 'tasseling silking and milk stage arc the critical growth stages of the crop when requirement of water is high.

**Harvesting:** The crop should be harvested at maturity stage when husk cover over the cob dries and turns brown and grain harden. After harvesting dry the cobs for two to three days and shell the dried cobs in corn sheller to separate out the grains from cob and dried in sun for safe storage.

**Expected yield:** The expected yield of this hybrid is 75-99q/ha subject to use under area of adaption, recommended climatic condition and package of practices.

**Seed Treatment:** Seed treated with Meatalaxyl Fungicide 3.5g per kg, Thiram 75%, Lambda Cyhalothrin 5 Ec & Thiamethoxam 25% WG.

**Note:** 1) Information given in this leaflet is derived from the observation made on our research farm. Variation can be observed with changes in environmental and edaphic factors.

2) Our seeds are treated with insecticide/fungicide Poison. Hence, the seeds should be used for Agriculture it sowing purpose only.

3) Please read disclaimer also given at the end of this packing literature.

**Produced, Packed and Marketed by: Agrius India Private Limited.**  
Address: MIG-36, 2nd floor, BDA Complex, Manisha Market Shahpura, Bhopal- 462016

**Phone:** 0755-4904800, +91 62628 48665

**Email:** agriusindia@gmail.com , www.agriusindia.com

# अमेज-121

अमेज-121 हे एग्रीअस इंडिया प्रायवेट लिमिटेड, भोपाल यानी विकसित कलल मक्याच सकरित वाण आहे.

**लागवडीसाठी शिफारस केलेले क्षेत्र:**

महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ, आंध्र प्रदेश, ओडीशा, तेलंगणा, कर्नाटक, तामिळनाडू.

**हंगाम :** या वाणाची शिफारस खरीप व रबी हंगामासाठी केली आहे.

**जमिनीची निवड व मशागत:** अमेज-121 विविध प्रकारच्या जमिनीत

वालुकामय ते चिकन माती मध्ये घेता येते. योग्य निचरा नसलेली खोलगट व क्षारयुक्त जमिन टाळणे गरजेचे आहे. जमिनीची १ नागरणी करून ३ ते ४ वखरणी करावी. शेवटच्या वखरणी अगोदर २०-२५ गाड्या/हेक्टर चांगले कुजलेले शेणखत किंवा कंपोस्ट खत जमिनीत व्यवस्थित मिसळावे.

**बीज प्रक्रिया :** बियाण्यास मेटलॅक्सी या बुखरीनाशकाची ३.५ ग्राम/किलो बियाणेची प्रक्रिया केलेली आहे.

**पेरणीची वेळ :** खरीप: मे ते जुलै.

**रबी :** ऑक्टोबर ते डिसेंबर.

**बियाण्याचे प्रमाण, लागवडीची पद्धत व अंतर :** एक हेक्टर लागवडीसाठी १८-२० किलो बियाणे पुरेसे आहे. पेरणी तिफनच्या साहाय्याने दोन ओळीतील अंतर ६० सेंमी. व दोन झाडातील अंतर २०-२५ सेंमी. कर करावी.

**रासायनिक खते व सुक्ष्म अन्नद्रव्ये व्यवस्थापन:**

खतांची मात्रा मृद चाचणीच्या आधारावर तसेच कृषी विद्यापीठ किंवा कृषी विभागाच्या शिफारसीच्या आधारे ठरवावी. साधारणपणे शिफारस केलेली मात्रा १२० किलो नत्र ६० किलो स्फुरद : ८० किलो पालाश प्रति हेक्टर आहे.

पेरणीच्या वेळी - ४० किलो नत्र + ६० किलो स्फुरद व ४० किलो पालाश दुसरी मात्रा - ४० किलो नत्र (पेरणीनंतर २१ दिवसांनी) तिसरी मात्रा - ४० किलो नत्र ४० किलो पालाश (पेरणीनंतर ४५ दिवसांनी)

जमिनीत झिकची कमतरता आढळून आल्यास २०-२५ किलो झिक सल्फेट प्रति हेक्टर द्यावे. पेरणीच्या वेळी व्हाईल्यू १० किलो / हेक्टर व कॅलबूम १२.५ किलो/हेक्टर पहिल्या मात्रेसोबत मिसळावे व कॅलबूमची दुसरी मात्रा नत्राच्या दुसऱ्या (पेरणीच्या ६० दिवसांनी) मात्रेसोबत द्यावे.

**तण नियंत्रण :** तण उगवणीपूर्वी, अँट्राजिन (पाउडर) १ किलो / एकर द्यावे. अँट्राजिन हे युरियाच्या पुरेश्या प्रमाणा मध्ये मिसळून पेरणी च्या वेळी द्यावे. तण आल्यानंतर, चांगल्या तण नियंत्रणासाठी ३७५ लिटर पाण्यामध्ये टिंझर तणनाशक @ ३३.६ ग्रॅम. ए.आय प्रति/लिटर एम.एस. ओ. एडजुवेंट्स @ २ मिली प्रति प्रति/लिटर / पाण्यामध्ये मिसळावे. (३ मिली टिंझर + ३० मिली एम. एस. ओ. एडजुवेंट्स प्रति लिटर पाणी). शेत तण मुक्त ठेवण्यासाठी ४०-४५ दिवसांपर्यंत २-३ डवरण्या कराव्या.

**किड नियंत्रण:** खोड किडा च्या नियंत्रणासाठी कार्बोप्थुरॉन ३जी १ किलो/हेक्टर द्यावे. देठाभोवतालचे पाने जवळ द्यावे. लष्करी अळीच्या नियंत्रणासाठी रोप तयार होतांना ते देठाभोवताली पाने येण्याच्या अवस्था मध्ये ५% एन. एस. के.ई. १५०० पीपीएम @ ५ मिली/ लि एफ.ए.डब्ल्यू. च्या दुसऱ्या व तिसऱ्या अवस्था मध्ये इमामेक्टीन बेनझोएट @ ०.४ ग्राम/लि. किंवा स्पीनोसॅड @ ०.३ मिली/लि. किंवा थायमेक्झाम १२.६% + लॅन्डा सायहॅलोथ्रॉन १.५% @ ०.५ मिली/लि. किंवा स्क्लोर्ट्रिनिप्रोल १८.५% एस.सी. ०.३ मिली/लि. पाणी.

**रोग नियंत्रण:** रोगांचा प्रादुर्भाव कमी राखण्यासाठी शेतात स्वच्छता ठेवावी पिक फेरपालट करून रोगग्रस्त झाडे दिसताच उपटून नष्ट करावी. करपा रोगाच्या नियंत्रणासाठी झायनेब ०.२% ची फवारणी करावी.

**ओलीत व्यवस्थापन :** जमिनीच्या प्रकारानुसार व उपलब्ध ओलाव्यानुसार पिकास नियमित पाणी द्यावे. तुऱ्याची अवस्था, खीकिसर बाहेर पडण्याची अवस्था व दुधाळ अवस्थामध्ये पाण्याची जास्त गरज असते.

**कापणी:** पक्वता झाल्यानंतर, कणसावरील आवरण वाळून तपकीरी झाल्यानंतर व दाणे कडक झाल्यानंतर पिकाची कापणी करावी. कापणीनंतर कणीस २ ते ३ दिवस वाळवून मशीनने दाणे काढून उन्हात वाळवून सुरक्षित साठवावे.

- टीप :** १) या परिपत्रकात दिलेली माहिती कंपनीच्या संशोधन केंद्रावरील माहितीवर आधारित आहे. वातावरणातील तसेच जमिनीतील फरकामुळे यामध्ये बदल होण्याची शक्यता आहे.
- २) आमची बियाणे किटकनाशके व रोगनाशके विषारी औषधे लावलेली असतात म्हणून त्याचा वापर फक्त पेरणीसाठीच करावा.
- ३) या परिपत्रकाच्या शेवटी दिलेले अस्वीकृतिपत्र वाचावे.

# अमेज-121

अमेज-121 यह एग्रीअस इंडिया प्रायवेट लिमिटेड, भोपाल द्वारा विकसित की गयी संकर मक्का किस्म है।

**बुआई के लिए सिफारिश किये गये क्षेत्र :**

महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु ।

**मौसम :** इस किस्म की सिफारिश खरीफ एवं रबी मौसम में की गयी है।

**जमीन का चुनाव एवं जमीन की तैयारी :** अमेज-121 इस किस्म की

बुआई रेतीली दोमट से बलुई दोमट जमीन में कर सकते हैं। जिस जमीन की जल निकासी अच्छी ना हो एवं जमीन में क्षार की मात्रा अधिक होनेपर ऐसी जमीन में बुआई ना करें। जमीन की अच्छी तरह जुताई करने के बाद ३ से ४ बार हेंगा फेरना चाहिए। अखिर हेंगा फेरने से पूर्व २० से २५ गाडी / हेक्टर पुरी तरह सड़ी हुई गोबर खाद या कंपोस्ट खाद अच्छी तरह मिलाकर जमीन समतल कर लें।

**बीजोपचार :** बीज को मेटलॅक्सी इस फफूंदीनाशक की ३.५ ग्राम/किलो बीज की दर से उपचारित किया गया है।

**बुआई का समय एवं बुआई का तरीका:**

**खरीफ :** मे से जुलाई

**रबी :** अक्टूबर से दिसंबर

**बीज दर, बुआई का तरीका एवं दूरी :** एक हेक्टर बुआई के लिए १८ से २० किलो बीज पर्याप्त है। बुआई मशीनद्वारा करें तथा २ कतार के बिच की दूरी ६० सेंमी एवं २ पौधों के बिच २०-२५ सेंमी. दूरी रखें।

**रासायनिक उर्वरक एवं सुक्ष्म पोषकतत्व प्रबंधन :**

मिट्टी परिक्षण, कृषि विश्वविद्यालय एवं कृषि विभागद्वारा सिफारिश के आधारपर उर्वरकों की मात्रा तय करें। सामान्यतः फसल को सिफारिश की गयी मात्रा १२० किलो नत्रजन : ६० किलो फास्फोरस: ८० किलो पोटाश है। बुआई के समय : ४० किलो नत्रजन: ६० किलो फास्फोरस: ४० किलो पोटाश।

दूसरी मात्रा - ४० किलो नत्रजन (बुआई के २१ दिनों बाद)

तिसरी मात्रा - ४० किलो नत्रजन: ४० किलो पोटाश (बुआई के ४५ दिनों बाद)

जमीन में ज़िक्र कमी होने पर २०-२५ किलो/हेक्टेयर ज़िंक सल्फेट का उपयोग करें। बुआई के समय वाईटल १० किलो / हेक्टेयर एवं कॅलबूम १२.५ किलो/हेक्टेयर पहली मात्रा के साथ तथा कॅलबूम की दूसरी मात्रा उर्वरक की दूसरी मात्रा के साथ (बुआई के ६० दिनों बाद) दें।

**खरपतवार नियंत्रण :** खरपतवार आने से पहले, अँट्राझिन (पावडर) @ १ किलो / एकड़। अँट्राझिन यह युरिया की पर्याप्त मात्रा में मिलीकर बुआई के समय दें। खरपवार आने के बाद, प्रभावित खरपतवार नियंत्रण के लिए ३७५ लिटर पानी में टिंझर ३३.६ ग्रॅम ए.आय./लिटर + एम.एस.ओ. एडजुवेंट्स २ मिली प्रति लिटर पानी (३ मिली टिंझर ३० मिली एम.एस.ओ. एडजुवेंट्स प्रति लिटर पानी.) फसल ४०-४५ दिनों की होने तक २-३ बार खुपरी अथवा शस्य क्रिया से खरपवार नियंत्रण करें।

**कीट एवं विमारी नियंत्रण:**

**किट :** तना छेदक के नियंत्रण हेतु कार्बोप्थुरॉन ३जी १० किलो/हेक्टेयर डंठल चारों ओर पत्तियों के गुच्छा के पास उपयोग करें। लष्करी ईल्ली के नियंत्रण हेतु पौधा तयार होने के अवस्था से डंठल के चारों ओर पत्तियों के गुच्छा आने के अवस्था में ५% एन.एस.के.ई १५०० पीपीएम @ ५ मिली/लि. एफ.ए. डब्लू के दुसरे एवं तिसरे अवस्था में इमामेक्टीन बेनझोएट @ ०.४ ग्राम/लि. तथा स्पीनोसॅड @ ०.३ मिली/लि. तथा थायमेक्झाम १२.६% + लॅन्डा सायटॅलोथ्रॉन १.५% @ ०.५ मिली/लि. अथवा स्क्लोर्ट्रिनिप्रोल १८.५% एस.सी. ०.३ मिली/ली. पाणी.

**विमारी :** खेत में सफाई रहने से विमारी नियंत्रण में मदद मिलती है। फसल बदलाव करें एवं क्षतीग्रस्त पौधे उखाड़कर नष्ट करें। फसलपर झायनेब ०.२% का छिड़काव करें।

**सिंचाई प्रबंधन :** मिट्टी की नमी एवं प्रकार के आधारपर सिंचाई करें। नर मंजरी आते समय, मादा फुल आनेकी अवस्था एवं दुधीया अवस्थाओं में पानी की आवश्यकता अधिक होती है।

**कटाई :** परिपक्व होनेपर फसल की कटाई करनी चाहिए। कटाई के बाद २ बुट्टे २-३ दिन सुखाएँ तथा शेलर की मदत से दाने अलग करें तथा धुप में सुखाकर सुरक्षित भंडारण करें।

**सूचना :**

- इस पत्रिका में दी गई जानकारी कंपनी के संशोधन पर आधारित है। मौसम तथा मिट्टी के बदलाव से इसमें फर्क आना संभव है।
- हमारे बीज जहरीले कीटनाशक और रोगनाशक से उपचारित है इसलिए इसका उपयोग सिर्फ बुआई के लिए करें।
- कृपया इस पत्रिका के अंत में दिया गया अस्वीकृति पत्र को अवश्य पढ़ें।

**संशोधक, उत्पादक, वितरक: एग्रीयस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड**

**पता :** एम.आई.जी.36, सेकण्ड फ्लोर, बी.डी.ए. कॉम्प्लेक्स, मनीषा मार्केट, शाहपुरा, भोपाल - 462016

**फोन:** 0755-4904800, +91 62628 48665

Email: agriusindia@gmail.com , www.agriusindia.com

# AMAZE-121

AMAZE-121 is the Maize Hybrid developed by AGRIOUS INDIA PVT. LTD.

**Recommended Area of Cultivation:**

Maharashtra, Madhya Pradesh, Chhattisgarh, Orissa. Gujarat, Rajasthan, Telangana, Karnataka and Tamilnadu.

**Season :** It is recommended for Kharif and Rabi Season.

**Selection of Field and Land Preparation :** AMAZE-121 can be grown successfully in variety of soils ranging from loamy sand to clay loam. It is desirable to avoid low lying fields having poor drainage and also the field having higher salinity. One ploughing and 3-4 harrowing should be followed to get good tillage and mix 20-25 cart load F1M/ha before last harrowing.

**Seed Treatment:** Seed treated with Meatalaxy1 Fungicide 3.5g per kg.

**Sowing time:**

**Kharif :** May to July

**Rabi :** October to December.

**Seed rate, Sowing method & Spacing :** 18-20 Kg/ha is followed to get the optimum plant population. Sowing is carried with seed drill maintaining row to row distance 60cm and plant to plant distance 20-25cm

**Fertilizer and Micro nutrient appucation :** The fertilizer doses should be applied on the basis soil test and recommendation of State Department of Agriculture or Agriculture Universities. However, the generalise dose of fertilizer for maize is 120 kg N: 60kg P :80 kg K per hectare. The fertilizer should be applied as following Basal 40 kg N: 60 Kg P : 40Kg K (at the time of sowing) Top dressing 40 Kg N (21 days after sowing) Top dressing 40 kg N : 40kg K (45 days after sowing)

If Zinc deficiency found in soil use 20-25 kg /ha Zinc sulphate. Mix Vital 10kg/ha and Calboom 12.5kg/ha with basal dose, of fertilizer at the time of sowing. Apply 12.5 kg/ha Calboom at second top dressing of urea (60 days after sowing).

**Weed Management :** Pre-emergence application of Atrazine (Powder)@ of 1 kg/ acer should be done. Atrazine should be mix in sufficient quantity of urea and should be applied at the time of basal dose application. For post-emergence Tynzer herbicide 33.6 g a.i./L+ MSO adjuvant @ 2 ml/L water diluted to 375 lit of water per hectare can be used for effective weed control (3 ml Tynzer herbicide+ 30 ml of MSO adjuvant per 15 lit.). Two to three hoeing should be followed till 40- 45 days crop age to keep the field weed free.

**Plant Protection:**

**Pest:** Use Corbofuron 3G @ 10kg/ha to control the stem

borer by applying it in to the whorl. To control Fall Armyworm larvae spray 5% NSKE 1500ppm @ 5ml/l during seedling to whorl stage. To manage II and IIIrf instat of FAW use Emamectine benzoate @ 0.4g/1 or spinosad @ 0.3ml/1 or Thimethoxam 12.6% + Lambdacyth-halothrine 9.5% @ 0.5ml/1 or Chlorantraniliprole 18.5% SC 0.3ml/l of water.

**Disease :** Clean cultivation always helps to reduce the disease attack. Follow the crop rotation and uproot the affected plant and destroy. Spray the crop with zineb @ 0.2% at the appearance of leaf blight.

**Water Management :** Crop should be irrigated at regular intervals based on available soil moisture and soil type. The 'tasseling silking and milk stage arc the critical growth stages of the crop when requirement of water is high.

**Harvesting:** The crop should be harvested at maturity stage when husk cover over the cob dries and turns brown and grain harden. After harvesting dry the cobs for two to three days and shell the dried cobs in corn sheller to separate out the grains from cob and dried in sun for safe storage.

**Expected yield:** The expected yield of this hybrid is 77-100q/ha subject to use under area of adaption, recommended climatic condition and package of practices.

**Seed Treatment:** Seed treated with Meatalaxy1 Fungicide 3.5g per kg, Thiram 75%, Lambda Cyhalothrin 5 Ec & Thiamethoxam 25% WG.

- Note:** 1) Information given in this leaflet is derived from the observation made on our research farm. Variation can be observed with changes in environmental and edaphic factors.
- 2) Our seeds are treated with insecticide/fungicide Poison. Hence, the seeds should be used for Agriculture it sowing purpose only.
- 3) Please read disclaimer also given at the end of this packing literature.

**Produced, Packed and Marketed by: Agrius India Private Limited.**

Address: MIG-36, 2nd floor, BDA Complex, Manisha Market Shahpura, Bhopal- 462016

Phone: 0755-4904800, +91 62628 48665

Email: agriusindia@gmail.com , www.agriusindia.com

**संशोधक, उत्पादक, वितरक: एग्रीयस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड**

**पता :** एम.आई.जी.36, सेकण्ड फ्लोर, बी.डी.ए. कॉम्प्लेक्स, मनीषा मार्केट, शाहपुरा, भोपाल - 462016

**फोन:** 0755-4904800, +91 62628 48665

Email: agriusindia@gmail.com , www.agriusindia.com